ISSN - 2229-3620

शोध संचार बुलेटिन

July-September, 2022
Vol. 12, Issue 47
Page Nos. 76-79

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

छ.ग. राज्य ग्रामीण विकास में पंचायती राज-व्यवस्था (कबीरधाम व जशपुर जिले का तुलनात्मक अध्ययन)

डॉ0 जरिन्ता मिंज*

शोध सारांश

पंचायतें प्रजातंत्र की रीढ़ होती हैं। किसी भी लोकतंत्रीय शासन प्रणाली का उद्देश्य होता है– सत्ता का विकेन्द्रीकरण। इसके पीछे यही सोच होती है कि शासन–संचालन समाज के शिखर रूपी कलश से न होकर उसे बनाने और टिकाए रखने वाले नींव के पत्थरों से हो। भारतीय समाज व शासन संचालन हेतु नींव के पत्थर यहाँ के गांव ही हैं। जिसकी माटी हमारी अर्थव्यवस्था को संभाले हुए है। कहते भी हैं कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। भारत ने लंबे समय तक गुलामी का दंश झेला और 15 अगस्त 1947 ई0 को आजाद हुआ। आजादी के बाद अपना संविधान सन् 1950 ई0 में बना। तब से लेकर अब तक निरंतर गांवों की खुशहाली के प्रयास हो रहे हैं। इसी तारतम्य में 01 नवम्बर, 2000 ई0 को बने नवीन प्रांत छत्तीसगढ़ ने भी राज्य के विकास के लिये ग्रामीण विकास को अपनी प्राथमिकता में रखा है। इस दिशा में पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के प्रयास समय–समय पर होते रहते हैं। छत्तीसगढ़ के 33 जिलों में से दो जिलों– जशपुर व कबीरधाम जिले ने भी पंचायती राज व्यवस्था में स्वयं को समुन्नत किया है। यह शोध दोनों जिलों में पंचायती राज व्यवस्था के तुलनात्मक अध्ययन–विश्लेषण पर आधारित है।

Keywords : ग्रामीण समाज, छत्तीसगढ़, पंचायती राज्य, कबीरधाम, जशपुर।

विषयवस्तु : भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता गांवों में निवास करती है। पंचायतें प्राचीन समय से ही भारतीय प्रशासन का अभिन्न अंग रहें हैं। पंच परमेश्वर की अवधारणा पंचायतों की परम्परा व प्रधानता की झलक प्रस्तुत करती है। वैदिक कालीन ग्रंथ अथर्ववेद में 'सभा' व 'समिति' का उल्लेख इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती है। चोलों का इतिहास तो स्थानीय स्वशासन की मिसाल है। हालांकि, इतिहास के पन्नों में कई राजनीतिक उथल–पुथल देखने को मिला, किन्तु पंचायतों का अस्तित्व आज भी स्वयं को प्रासंगिक बनाए हुए है।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था के जनक ब्रिटिश वायसरॉय लार्ड रिपन को माना जाता है। सन् 1882 में ब्रिटिश प्रशासन ने वायसरॉय लार्ड रिपन के नेतृत्व में स्थानीय स्वशासन स्थापना की प्रथम प्रभावपूर्ण प्रयास किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी आजादी के पूर्व ही पंचायती राज की कल्पना की थी। जब भारत आजाद हुआ, तो जरूरत महसूस हुई एक ऐसे विधान संग्रही की, जिसके आधार पर स्वतंत्र भारत का प्रशासन चलाया जा सके। भारतीय समाज को समझते हुए 26 जनवरी, सन् 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ। भारतीय संविधान में नीति निदेशक तत्वों के अनुच्छेद 40 में प्रावधान रखा गया कि सरकार ग्राम पंचायतों की स्थापना के लिये आवश्यक कम उठाएगी। पंचायतों को ऐसी शक्ति प्रदान करेगी कि वे स्वायत्त शासन हेतु सक्षम हो सके।

ग्रामीण समस्याओं के अध्ययन हेतु 1957 ई. में बलवंत राय मेहता समिति गठित की गई। इस समिति ने सामुदायिक विकास को लक्ष्य तथा पंचायती राज संस्थाओं को उद्देश्य की पूर्ति का माध्यम माना। इस समिति ने पंचायत में त्रिस्तरीय व्यवस्था के स्थापना की सलाह दी थी। जिसके अंतर्गत जिला स्तर पर जिला पंचायत, ब्लॉक स्तर पर प्रखंड पंचायत और ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत की व्यवस्था होनी है।

स्वतंत्रता के बाद पंचायती राज संस्थानों ने लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के आदर्श को संस्थात्मक स्वरूप प्रदान किया। पहली बार 1959 ई. में राजस्थान के नागौर जिले में पंचायती राज व्यवस्था को मेहता समिति की सिफारिशों के अनुरूप लागू हुई। यह वह समय था, जब भारत गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, जात–पात, अंधविश्वास जैसी विभिन्न समस्याओं से ग्रसित था। ऐसे में पंचायती राज व्यवस्था उम्मीद की एक किरण थी, कि गांव प्रगतिशील बन सके, आत्मनिर्भर बन सके। स्थानीय स्वशासन पर समय–समय पर संशोधन भी हुए। इस परिप्रेक्ष्य में सबसे अधिक

*सहायक प्राध्यापक – राजनीति विज्ञान, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छ0ग0

उल्लेखनीय रहा– 73वां व 74वां संविधान संशोधन, जिसके माध्यम से 24 अप्रैल, 1993 ई. को पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता मिल गई। 01 नवम्बर, 2000 को मध्यप्रदेश से पृथक होकर छत्तीसगढ़ नया राज्य बना और मध्यप्रदेश की भांति पंचायती राज व्यवस्था स्वमेव अपना ली गई।

मुख्य अंश :

कबीरधाम जिला :– छत्तीसगढ़ के उत्तर–पश्चिमी भाग में कवर्धा जिला स्थित है। कवर्धा को रजस्व अभिलेख में कबीरधाम के रूप में अभिहित किया गया है। जिला कबीरधाम एक आकर्षक स्थान है। जिला कबीरधाम एक शांत और आकर्षक स्थान है। यह सकरी नदी के तट पर है। कबीर साहब के आगमन और उनके शिष्य धर्मदास के वंशजों की गद्दी की स्थापना के कारण इसे कबीरधारम नाम दिया गया। कबीरधाम में भोरमदेव एक ऐतिहासिक व पुरातात्विक स्थल के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। यह स्थान 9वीं से 14वीं सदी तक नागवंशी शासकों की राजधानी रहा। इसके बाद यह क्षेत्र रतनपुर के कलचुरिवंश से संबंधित है यह वंशी शासकों के अधीन आ गया। दिनांक 06 जुलाई, 1998 ई. को राजनांदगांव के कुछ हिस्से को अलग कर कबीरधाम जिले की स्थापना की गई। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4447.05 वर्ग किमी है। वर्ष 2020–21 के आंकड़ों के अनुसार जिले में 04 विकासखण्ड हैं– कवर्धा, पंडरिया, बोडला और सहसपुर लोहारा। 2011 की जनगणना के अनुसार कबीरधाम जिले की कुल जनसंख्या 822526 है, जिसमें 412058 पुरुष व 410468 महिलाएं हैं। लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों पर 996 महिलाएं हैं। जनसंख्या घनत्व 185 प्रति वर्गकिमी है।

कबीरधाम जिले में गांव व पंचायतों की संख्या

सरल क्र.	विकासखण्ड का नाम	पंचायतों की संख्या
1	कवर्धा	105
2	पंडरिया	144
3	बोडला	123
4	सहसपुर लोहारा	96

इस प्रकार, कबीरधाम जिले में कुल 4 विकाखण्ड हैं, जिनमें 468 पंचायतें हैं। इन पंचायतों की पिछले 10 वर्षों की जानकारी एक सर्वे के माध्यम से की गई। प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से जो आंकड़ें प्राप्त किए गये, उनका विश्लेषण निम्नानुसार है :–

1. पंचायती राज से कबीरधाम जिले की संतुष्टि का प्रतिशत– 96 प्रतिशत
2. पंचायतें शिक्षा के विकास पर कितना ध्यान देती हैं– 98 प्रतिशत
3. पंचायतें स्वास्थ्य सुविधा पर कितना ध्यान देती हैं– 73 प्रतिशत
4. पंचायतों में शासन की सभी योजनाओं की जानकारी मिलती है– 81 प्रतिशत

जशपुर जिला :– छत्तीसगढ़ के उत्तर पूर्वी भाग में जशपुर जिला स्थित है। जशपुर जिला एक आकर्षक स्थान होने के साथ जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है। जशपुर जिला एक खूबसूरत प्राकृतिक स्थल के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। यह स्थान जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 6205 वर्ग किमी आंकड़ों के अनुसार जिले में 08 विकासखण्ड हैं– अम्बिकापुर, लखनपुर, उदयपुर, लुण्ड्रा, बतौली, सीतापुर और मैनपाट। 2011 की जनगणना के अनुसार जशपुर जिले की कुल जनसंख्या 851669 है, जिसमें 424747 पुरुष व 426922 महिलाएं हैं। लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों पर 1004 महिलाएं हैं। जनसंख्या घनत्व 146 प्रति वर्ग किमी है।

सरगुजा जिले में गांव व पंचायतों की संख्या

सरल क्र.	विकासखण्ड का नाम	पंचायतों की संख्या
1	जशपुर	44
2	मनोरा	44
3	कुनकुरी	51
4	दुलदुला	30
5	फरसाबहार	58
6	बगीचा	93
7	कांसाबेल	40
8	पत्थलगांव	84

इस प्रकार, जशपुर जिले में कुल 8 विकाखण्ड हैं, जिनमें 427 पंचायतें हैं। इन पंचायतों की पिछले 10 वर्षों की जानकारी एक सर्वे के माध्यम से की गई। प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से जो आंकड़ें प्राप्त किए गये, उनका विश्लेषण निम्नानुसार है :–

1. पंचायती राज से जशपुर जिले की संतुष्टि का प्रतिशत– 83 प्रतिशत
2. पंचायतें शिक्षा के विकारा पर कितना ध्यान देती हैं– 97 प्रतिशत
3. पंचायतें स्वास्थ्य सुविधा पर कितना ध्यान देती हैं– 59 प्रतिशत
4. पंचायतों में शासन की सभी योजनाओं की जानकारी मिलती है– 62 प्रतिशत

अब हम एक नज़र डाल लेते हैं सन् 2022 में पंचायती राज संबंधित पुरस्कारों पर। यह देखना कबीरधाम व जशपुर जिले में पंचायती राज व्यवस्था के तुलनात्मक अध्ययन–विश्लेषण को और अधिक स्पष्ट करने के लिये उचित व सहायक होगा। वस्तुतः प्रति वर्ष इस श्रेणी में पुरस्कार प्रदान करने का तात्पर्य है कि पुरस्कृत पंचायतें पंचायती राज व्यवस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रयत्नशील रहे हैं।

Awardees 2022

Child-frendly Gram Panchayat Award (CFGPA)- 2022 (Appraisal Year 2020-21)

Sl. No.	State/UT	Name of Gram Panchayat/Village Council with hierarchy		
		District Panchayat	*Intermediate/ Block Panchayat*	*Gram Panchayat/ Village Council*
1.	Chhattisgarh	Raipur	Arang	**Banchraoda (LGD Code: 128671)**

Gram Panchayat Development Plan Award (GPDPA)-2022 (Appraisal Year 2020-21)

Sl. No.	State/UT	Name of Gram Panchayat/Village Council with hierarchy		
		District Panchayat	*Intermediate/ Block Panchayat*	*Gram Panchayat/ Village Council*
1.	Chhattisgarh	Durg	Durg	**Jevara (LGD Code: 124560)**

Nanaji Deshmukh Rashtriya Gaurav Gram Sabha Puraskar (NDRGGSP) -2022 Appraisal Year (2020-21)

Sl. No.	State/UT	Name of Gram Panchayat/Village Council with hierarchy		
		District Panchayat	*Intermediate/ Block Panchayat*	*Gram Panchayat/ Village Council*
1.	Chhattisgarh	Raipur	Tilda	**Sarora (LGD Code :129737)**

Deen Dayal Upadhyay Panchayat Sashaktikaran Puraskar (DDUPSP) -2022 (Appraisal Year 2020-21)

1. **Chhattisgarh : 1+2+6=9**					
Tier of Panchayat	**Sl. No.**	**Name of Panchayat with hierarchy**			**Category of Award** *(General/Thematic)*
		District Panchayat	*Intermediate/ Block Panchayat*	*Gram Panchayat /Village Council*	
District	1.	**Kabirdham** (LGD Code:382)	-	-	General
Intermediate /Block	2.	Durg	**Patan** (LGD Code: 3639)	-	General
	3.	Surajpur	**Surajpur** (LGD Code:3733)	-	General

Gram	4.	Dhamtari	Nagari	**Chhipli** (LGD Code:123919)	General
	5.	Dhamtari	Nagari	**Hardibhata** (LGD Code:124006)	General
	6.	Korca	Khadgwana	**Chirmi** (LGD Code:127271)	General
	7.	Balod	Gunderdehi	**Pairy** (LGD Code:124672)	General
	8.	Surajpur	Surajpur	**Basdei** (LGD Code: 131323)	**Thematic- e- Governance**
	9.	Kabirdham	S. Lohara	**Kejadah** (LGD Code:263392)	**Thematic- Sanitation**

परिणाम व सुझाव : उक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुल मिलाकर, कबीरधाम जिला व जशपुर जिला दोनों ही पंचायती राज से लाभान्वित है। जहाँ तक बात है कबीरधाम जिले की, तो शिक्षा पर लगभग पूरी तरह ध्यान देने के बाद भी समस्त शासकीय योजनाओं की जानकारी न प्राप्त कर पाना इस बात का संकेत है कि सिर्फ साक्षरता पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय जागरूकता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हालांकि, जशपुर जिले की स्थिति तो और अधिक खराब है। इसके पीछे यह प्रश्नावली के अध्ययन–विश्लेषण से यह बात भी सामने आती है कि पढ़ा–लिखा वर्ग सामान्यतः नौकरी इत्यादि कि मामलों की वजह से जशपुर जिले से बाहर चला जाता है। जहाँ तक जशपुर जिले की बात है तो जशपुर जिले में पंचायती राज व्यवस्था स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में सुधार चाहती दिखती है। कुल मिलाकर, पंचायती राज व्यवस्था के मसले पर छत्तीसगढ़ की स्थिति प्रोत्साहनपूर्ण है। यदि हम छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों की बात करें तो यह दृष्टव्य है कि छत्तीसगढ़ में जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र में पंचायती राज व्यवस्था की स्थिति में सुधार की गुजांइश है। पुरस्कारों का विश्लेषण करें तो कबीरधाम जिले को पुरस्कृत किया गया है जबकि जशपुर जिले को नहीं। यद्यपि कबीरधाम जिले में भी पंचायती राज व्यवस्था कुछ हद तक ही संतोषजनक स्थिति में है।

सन्दर्भ :–

1. ग्रामीण सचिवालय, जिला सरगुजा, प्रकाशन– पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, छ0ग0 शासन, रायपुर 2004
2. फाख्याल, डॉ. एच.एस.– दि अपोजिशन इन इण्डियन पार्लियामेन्ट, 1971.
3. हेन्सन एण्ड डगलस– इण्डियन डेमाक्रेसी, 1972
4. देवपुरा, प्रतापमल– गांव के विकास की प्रक्रिया, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, 2016
5. देवपुरा, प्रतापमल– ग्रामीण विकास का आधार आत्मनिर्भर पंचायतें, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
6. रिंह, कटार– ग्रामीण विकास, अनुवादक– यतीन्द्र सिंह रिसोदिया, सेज पब्लिकेशन, 2011
7. त्रिपाठी, डॉ. वाई.पी.– लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं पंचायती राज व्यवस्था, 2008
8. प्रश्नावली– 100 ग्रामवासी, जिला कबीरधाम
9. surguja-vision-2012
10. https://kawardha.gov.in>about-district>history
11. https://kawardha.gov.in>administrative-setup>village
12. https://www.panchayat.gov.in>web>chhattisgarh
13. गांव – और – पंचायत
14. https://www.panchayat.gov.in/web/ministry-of-panchayati-raj-2/list-of-awardee-panchayats

❐❐❐